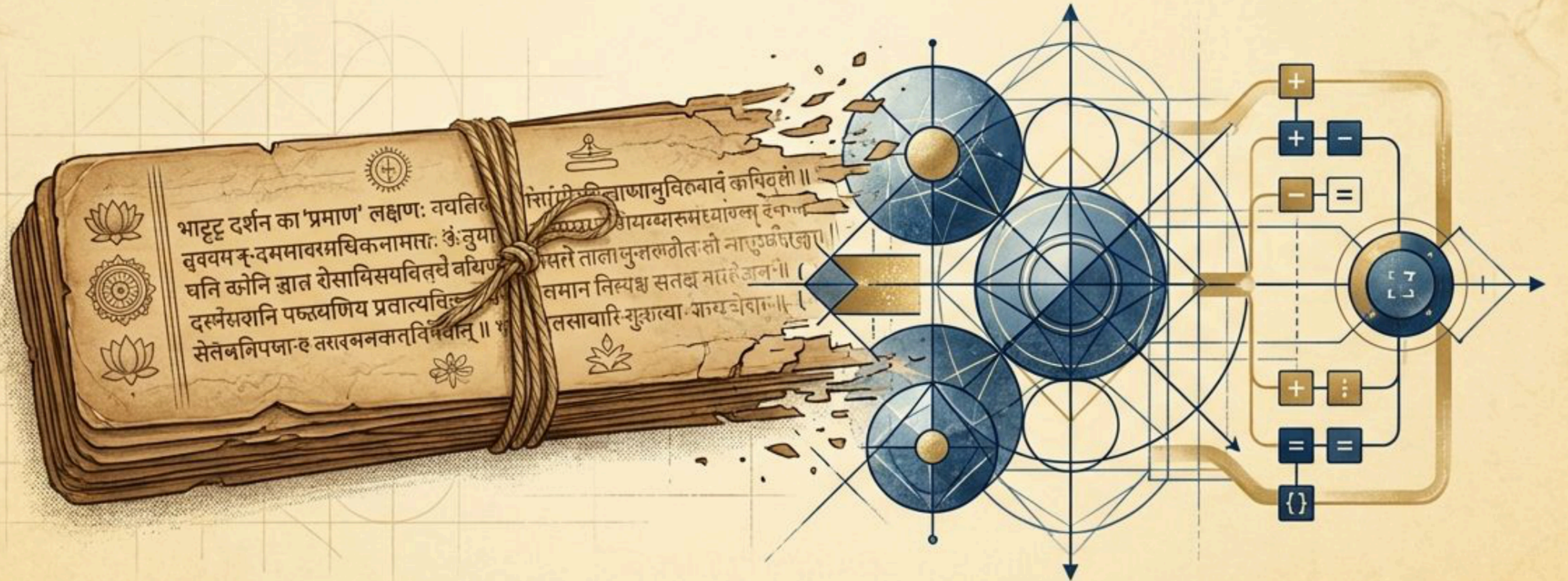


जब परिभाषा अपने ही ज्ञान को नकार दे...

भाट्ट दर्शन का 'प्रमाण' लक्षण: एक तार्किक समीक्षा

न्याय दीपिका के आलोक में कुमारिल भट्ट की मान्यताओं का जैन खण्डन



ज्ञान की कसौटी: प्रमाण



सत्य की खोज और 'न्याय दीपिका'

आचार्य अभिनव धर्मभूषण यति रचित 'न्याय दीपिका' जैन न्याय का परम मांगलिक ग्रंथ है। यह ग्रंथ सत्य ज्ञान (प्रमाण) की सूक्ष्म परीक्षा करता है।

इस शास्त्रार्थ का विषय:

इस प्रस्तुति में हम मीमांसक दर्शन की एक प्रमुख शाखा—भाट्ट मत (कुमारिल भट्ट)—द्वारा प्रस्तुत 'प्रमाण' की परिभाषा की तार्किक परीक्षा करेंगे।

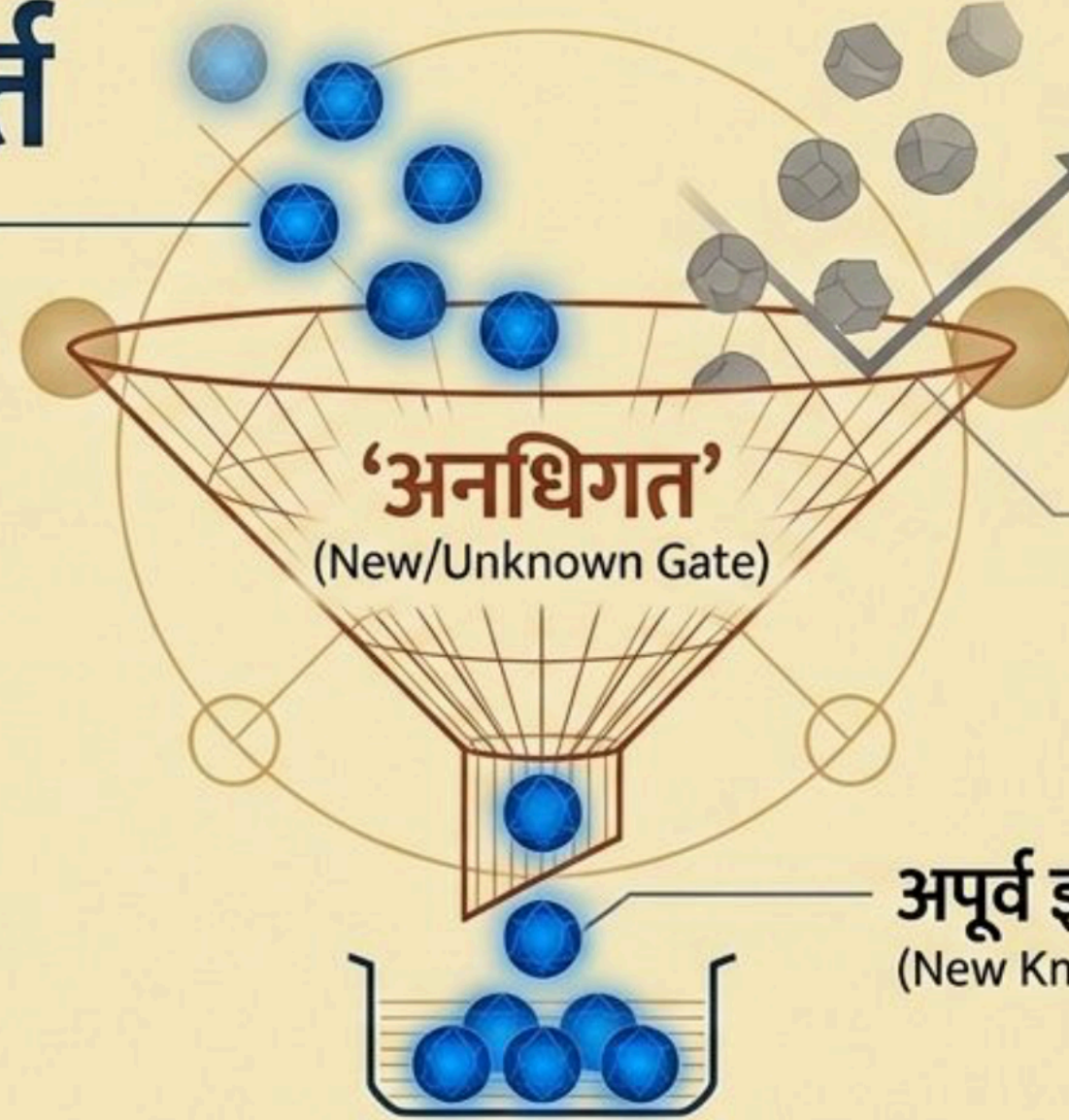
अनधिगत तथा भूत अर्थ निश्चयायकं प्रमाणं



भाट्ट दर्शन का निष्कर्ष: सच्चा ज्ञान वही है जो किसी नई (अपूर्व) वस्तु का यथार्थ निश्चय कराए।

‘अनधिगत’ - भाट्ट परिभाषा की सबसे बड़ी शर्त

ज्ञान को प्रमाण तभी माना जाएगा जब वह उस बात का निश्चय कराए जिसे आपने पहले नहीं जाना है।



यदि ज्ञान में कुछ भी नया नहीं है (जो आटा पहले ही पीसा जा चुका है), तो भाट्ट मत उसे प्रमाण नहीं मान सकता।

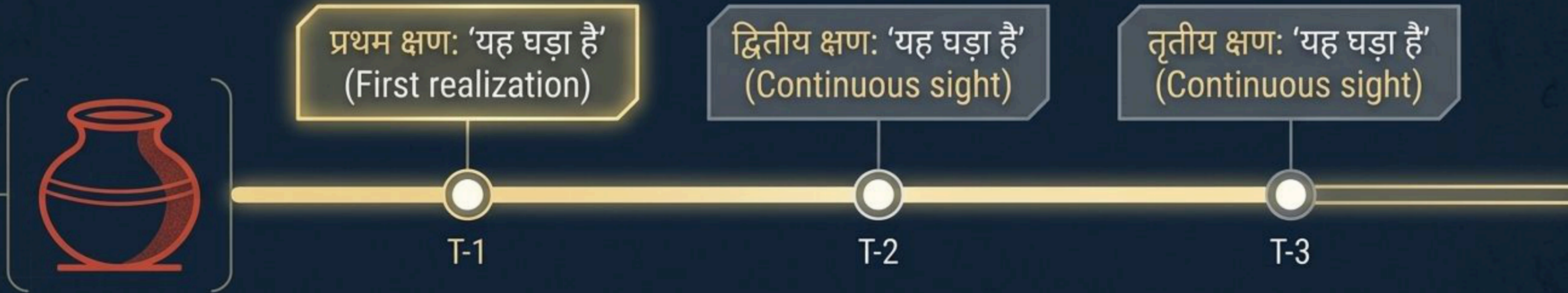
पूर्व परिचित ज्ञान
(Already Known Information)

अपूर्व ज्ञान
(New Knowledge)

क्या यह शर्त हर प्रकार के सत्य ज्ञान पर लागू हो पाती है? यहीं से तार्किक उलझन शुरू होती है।

उलझन की शुरुआत: 'धारावाहिक ज्ञान' का जाल

जब हम किसी वस्तु को लगातार देखते हैं, तो उस निरंतर ज्ञान को धारावाहिक ज्ञान (Continuous Cognition) कहते हैं।



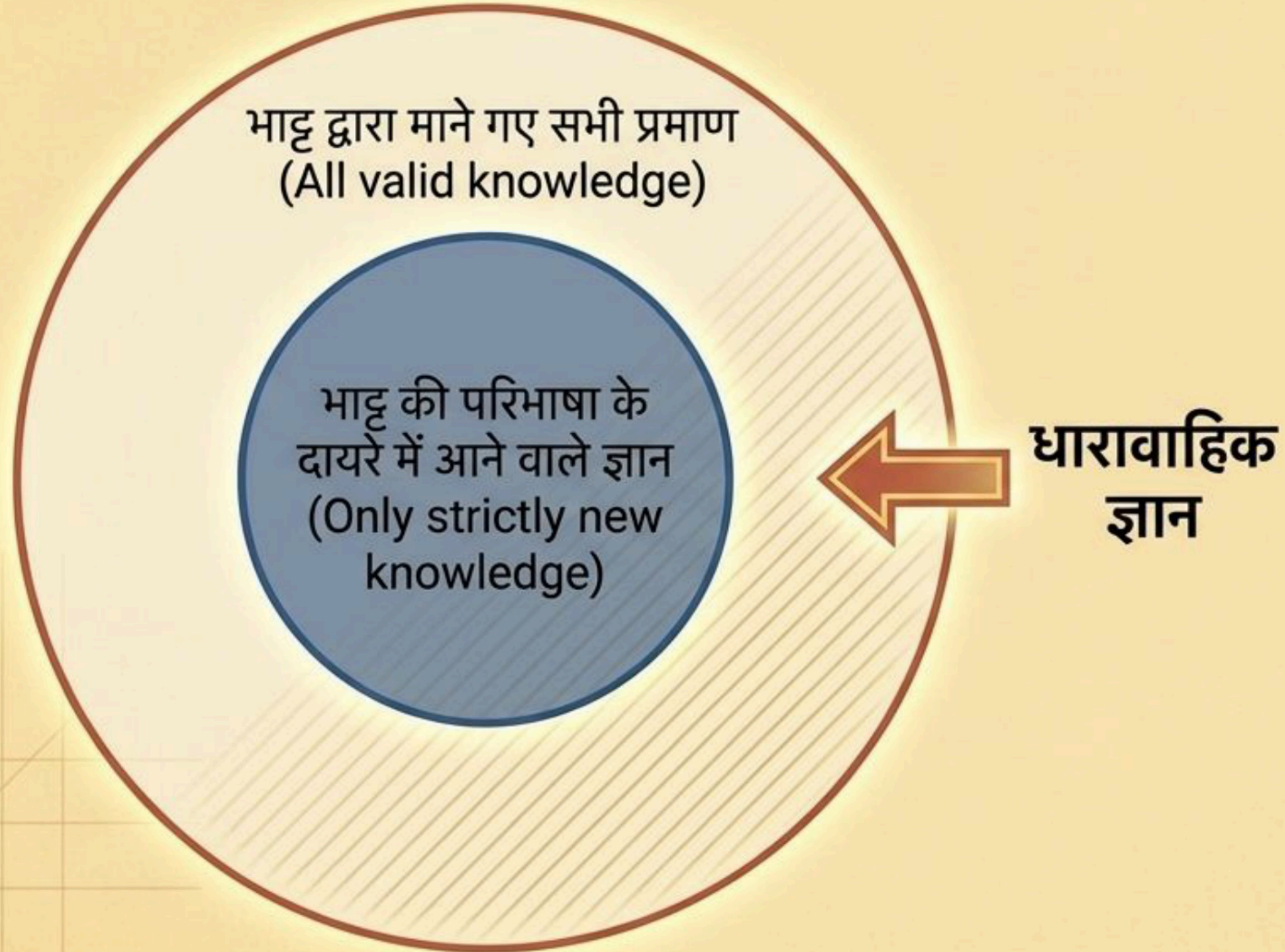
विरोधाभास (The Paradox): भाट्ट मीमांसक स्वयं इस 'धारावाहिक ज्ञान' को पारमार्थिक रूप से प्रमाण (सच्चा ज्ञान) मानते हैं। लेकिन क्या यह ज्ञान 'नया' है?

अग्नि-परीक्षा: क्या परिभाषा अपनी ही मान्यता पर खरी उतरती है?

	ज्ञान की अवस्था	यथार्थ (तथाभूत) है?	निश्चयात्मक है?	अपूर्व (अनधिगत) है?	भाट्ट के अनुसार क्या यह 'प्रमाण' है?
1	प्रथम ज्ञान (First Sight)	हाँ 	हाँ 	हाँ (नया है) 	प्रमाण है 
2	धारावाहिक ज्ञान (Continuous)	हाँ 	हाँ 	नहीं! (यह प्रथम क्षण में ही जाना जा चुका है) 	परिभाषा के अनुसार 'प्रमाण' नहीं होना चाहिए! 

निष्कर्ष: धारावाहिक ज्ञान में कोई नवीनता (अनधिगतता) नहीं है।
जो आटा पहले ही पीसा जा चुका है, उसे दोबारा नहीं पीसा जाता!

न्याय दीपिका का निष्कर्ष: 'अव्याप्ति दोष'



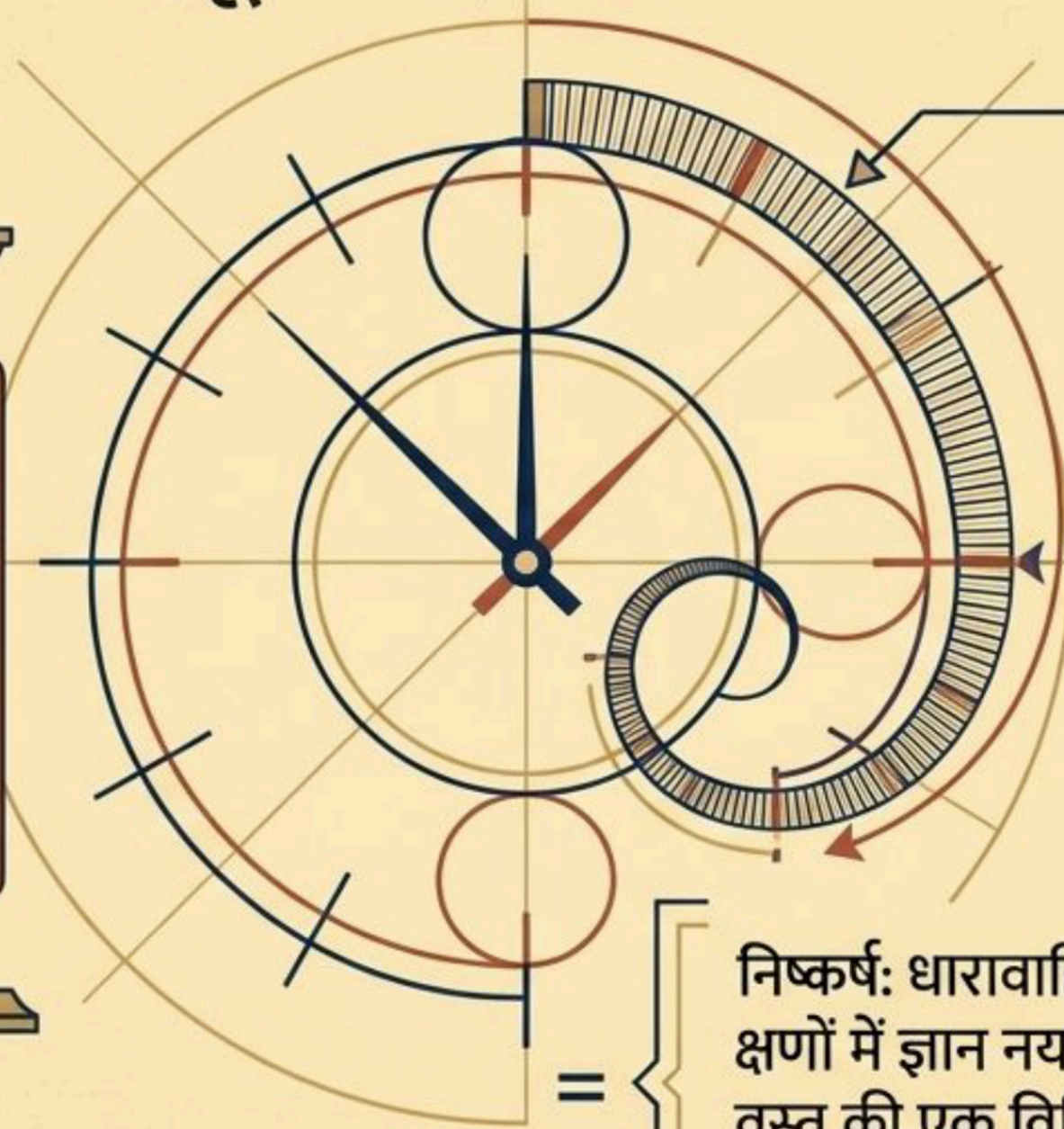
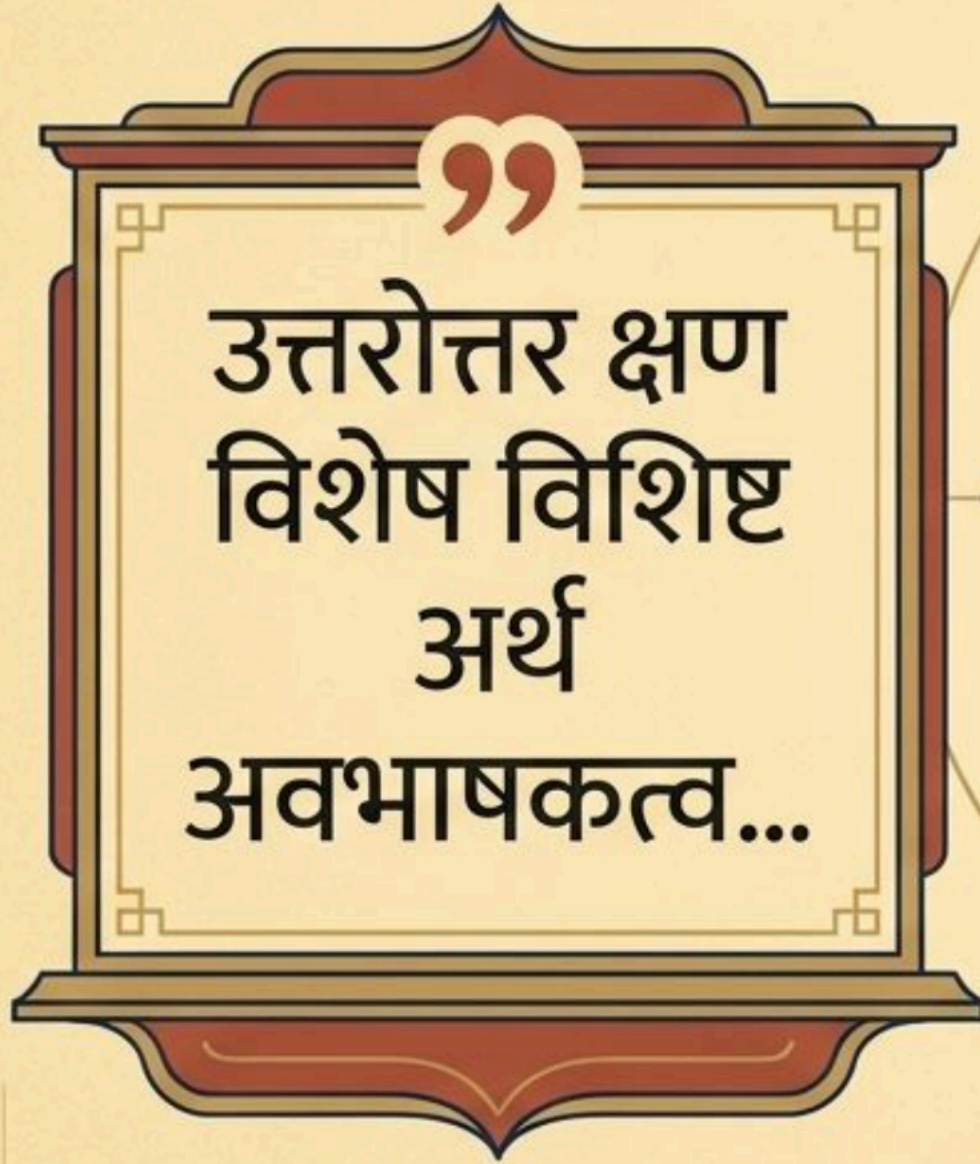
अव्याप्ति दोष

जब कोई परिभाषा अपने ही लक्ष्य के एक हिस्से (एक देश) में लागू न हो पाए।

परिणाम

भाट्ट ने धारावाहिक ज्ञान को प्रमाण तो माना, लेकिन उनकी अपनी ही परिभाषा (अनधिगत की शर्त) उस ज्ञान वान को अपने दायरे से बाहर कर देती है। यह लक्षण अव्याप्त है।

भाट्ट मीमांसक का बचाव (पूर्व पक्ष)



भाट्ट का तर्क: धारावाहिक
ज्ञान में अव्याप्ति दोष नहीं है!

क्यों?: क्योंकि समय (क्षण)
निरंतर बदल रहा है।

=

निष्कर्ष: धारावाहिक ज्ञान के अगले-अगले (उत्तरोत्तर)
क्षणों में ज्ञान नया ही होता है। हर गुजरते पल के साथ
वस्तु की एक विशिष्ट (नई) अवस्था का ज्ञान होता है।
इसलिए, हर क्षण में 'अनधिगत' (अपूर्वता) बनी रहती है।

जैन समाधान: क्षण की अति सूक्ष्मता का सत्य

इति न आशङ्कनीयम्... क्षणानां अतिसूक्ष्मानां आलाक्षयितुं अशक्यत्वात्

(ऐसी आशंका नहीं करनी चाहिए)



समय की सबसे छोटी इकाई
(क्षण) अत्यंत सूक्ष्म है।

अशक्य (Impossible):
छद्मस्थ (अल्पज्ञानी) मनुष्यों
के लिए हर एक क्षण में होने
वाले नए सूक्ष्म बदलावों को
पकड़ना (लक्षित करना)
पूर्णतः असंभव है।

सैद्धांतिक कल्पना बनाम व्यावहारिक अनुभव

भाट्ट की कल्पना (Theory)

क्या लगातार 'यह घड़ा है' बोलते समय
आपको हर सेकंड घड़े के बारे में करोड़ों
नई बातों का निश्चय होता है?
(उत्तर: नहीं)

जैन यथार्थ (Reality)



जब हमारे ज्ञान में क्षण-क्षण की अपूर्वता पकड़ में आ
ही नहीं रही है, तो धारावाहिक ज्ञान में 'अनधिगत'
(नयापन) कैसे सिद्ध किया जा सकता है?

अतः, भाट्ट का यह बचाव केवल एक कल्पना है, जो अव्यावहारिक और अशक्य है।

सार: पूर्वापर दोष और जैन न्याय की विजय

भाट्ट मत का अंतर्विरोध:

या तो उन्हें धारावाहिक ज्ञान को 'प्रमाण' मानना छोड़ना होगा, या अपनी परिभाषा से 'अनधिगत' (नयापन) की शर्त हटानी होगी। दोनों एक साथ नहीं चल सकते।

जैन दृष्टि की स्पष्टता:

जो ज्ञान नवीन निश्चय नहीं करा रहा, वह मात्र 'परिचित' या 'जानकारी' है। जैन न्याय उसे पारमार्थिक प्रमाण नहीं मानता (जब तक वह नवीन निश्चय/अपूर्वार्थता रूप परिणत न हो)।

जैन आगम पूर्वापर दोषों से सर्वथा रहित है। सत्य की सिद्धि के लिए परिभाषाओं का यथार्थवादी होना अनिवार्य है—यही 'न्याय दीपिका' का परम संदेश है।